Indian J. Soc &.Pol. 1(2):49-52:2014 **ISSN : 2348-0084**

हिन्दी पत्रकारिताः तब और अब

विनोद कुमार यादव[1]

[1]प्रवक्ता ,हिन्दी, पचोतर महाविद्यालय मरदह ,गाजीपुर, उ0प्र0 भारत

पूर्वपीठिका

हिन्दी पत्रकारिता जिसका उद्‌भव वास्तव में भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष, स्वाधीनता आन्दोलन तथा पराधीनता के दौर में हुआ था। ''वस्तुतः कई सौ सुधारक और स्वत्रंता सेनानी पत्रकारिता का उपयोग कर रहे थे। सबका समान उद्‌देश्य था भारत को स्वतंत्र कराना। यह मिशन अपने आप में सबका साझा था। आज अपनी जन्म काल के परिस्थितियों से काफी आगे निकल चुकी है। जिस समय हिन्दी पत्रकारिता का जन्म हुआ उस समय हिन्दी पत्रकारिता साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी आकांक्षाओं के पैरों के तले दबे रहते हुए भारतीय मुक्ति संग्राम के लिए एक जीवटतापूर्ण संग्राम में लगी हुई थी। उस समय हिन्दी पत्रकारिता कें अतिरिक्त अन्य कोई अचूक अस्त्र नहीं था। जैसा कि अकबर इलाहाबादी ने इस बात को रेखांकित करते हुए कहा था–'अगर तोप सामने हो तो, अखबार निकालो।प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी पत्रकारिता के अतीत तथा वर्तमान के स्वरूपों का तुलनात्मक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी पत्रकारिता भी अन्य समस्त भारतीय पत्रकारिताओं के साथ ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध अत्यन्त महत्वपूर्ण समाधान थी। उस समय हिन्दी पत्रकारिता वर्तमान एवं आधुनिक पत्रकारिता की भांति एक व्यवसाय नहीं अपितु एक विशुद्ध धर्म थी। बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में आज हिन्दी पत्रकारिता अनेकानेक कारणों से व्यवसायिक हो गयी है। डॉ0 राजकिशोर जी ने यहां तक कहा है कि ''आधुनिक पत्रकारिता पूँजीवाद की औलाद है।(राजकिशोर, पृ20)आलोचकों ने हिन्दी पत्रकारिता पर मूल्यों से समझौता करने, नव साम्राज्यवादी और नव उपनिवेशवाद के सामने घुटने टेकने का आरोप भी लगाया है। ये आरोप तो यहॉ तक लगाये जा रहे हैं कि वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता अपने आप को खोकर दिशाहीन हो चुकी है।

इस सन्दर्भ में यदि हम निरपेक्ष और तटस्थ दृष्टिकोण से देखते हैं तो पाते हैं कि हिन्दी पत्रकारिता आज रूपान्तरित तो हुई है किन्तु उसका वास्तविक स्वरूप आज भी वही है जो इसके अविर्भावकाल में भारतेन्दु बाबू, पंडित युगल किशोर शुक्ल, पं0 प्रताप नारायण मिश्र, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि के युग में हुआ करता था। अन्तर सिर्फ वाह्य कलेवर को लेकर है। यह परिवर्तन अपरिहार्य और प्रासंगिक भी है। क्योंकि वर्तमान समय की चुनौतियॉ स्वाधीनता संघर्ष की चुनौतियों से अलग हैं। अलग इसलिए क्योंकि स्वाधीनता संघर्ष के दौरान हिन्दी पत्राकरिता को अपने अस्तित्व व अतिजीविता के लिए संघर्ष न करके अपनी अस्मिता और मातृभूमि के लिए संघर्ष करने की चुनौती थी जो अब बदल चुकी है। आज उसके सामने विकटता और विषमताएँ अधिक है।

हिन्दी पत्रकारिता के सामने आज न केवल अपनी अस्मिता, भारतीय स्वतंत्रता और सम्प्रभुता की रक्षा करने की चुनौती खड़ी है बल्कि उसके सामने सबसे बड़ी समस्या अपनी अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा करना है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में किसी भी राष्ट्र की पत्रकारिता न सम्राज्यवाद, न उपनिवेशवाद के आक्रमण का मर्म बिन्दु और मर्मस्थल हो चुकी है, यह न केवल भारतीय और हिन्दी पत्रकारिता बल्कि विश्व के समस्त पत्रकारिताओं के साथ सत्य है। आज भूमण्डलीकरण और संचार क्रान्ति से निपटने की चुनौतियॉ खड़ी हैं तो दूसरी ओर उसे अपने स्वरूप को बचाने की भी चुनौती खड़ी है।

आज हिन्दी पत्रकारिता के सामने सन्दर्भ बदल गये है और इन्हीं बदलते हुए सन्दर्भो के कारण हिन्दी पत्रकारिता को भी अपने आप को परिवर्तित करना पड़ रहा है। स्वाधीनता संघर्ष के समय हिन्दी पत्रकारिता के सामने निम्नलिखित महत्वपूर्ण सन्दर्भ थे–

- साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद से लड़ने की चुनौती।
- अपने लिए एक मानक स्वरूप के निर्धारण की चुनौती।
- अपने आधार को सशक्त और मजबूत बनाने की चुनौती।
- प्राच्यवादी मूल्यों के पाश्चात्यवादी मूल्यों से बचाने रखने की चुनौती।
- निरपेक्ष एवं निष्काम भावना से समर्पित पत्रकारों, पत्रकारिता एवं पाठकवर्ग की अपेक्षाओंपर अक्षरसह खरा उतरने की चुनौती।

1: Corresponding Author

वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता के सामने चुनौतियों के सन्दर्भ बदल गये हैं जैसे–

1. भूमण्डलीकरण एवं संचार क्रान्ति से निपटने की चुनौती।
2. हिन्दी के परम्परागत पाठक वर्ग जो हिन्दी पत्रकारिता के आधार स्तम्भ भी है, की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की चुनौती।
3. वर्तमान बाजारवाद के दौर में बाजार से मिलने वाली चुनौतियों से इस प्रकार से निपटने की चुनौती कि हिन्दी पत्रकारिता के मूल स्वरूप पर ऑच न आये।
4. भारत की स्वतंत्रता व सम्प्रभुता तथा उसकी गरिमा को बचाये रखने की चुनौती।
5. पत्रकारिता के आधारभूत मानकों और मापदण्डों पर खरा उतरने की चुनौती।

उपरोक्त बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में जब हम ध्यान देते हैं तो एक बात हमारे सामने स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती है कि अपने बदलते हुए परिप्रेक्ष्य में आज हिन्दी पत्रकारिता उपरोक्त चुनौतियों से निपटने में पूरी तरह से सफल रही है। जैसे जब संचार क्रान्ति की शुरूआत हुई तो उस समय आलोचकों और समीक्षकों की यही राय थी कि हिन्दी पत्रकारिता के दिन अब गिने चुने ही शेष रह गये हैं। लेकिन संचार क्रान्ति के शुरूआत के दो दशक बीत जाने के बावजूद हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी सार्थकता और प्रासंगिकता को जस का तस साबित कर दिया है। इसी प्रकार वर्तमान दौर को यदि हम यह कहें कि यह संचार क्रान्ति का स्वर्णिम दौर है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि आज के युवा वर्ग में संचार क्रान्ति की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। किन्तु इस बढ़ती हुई लोकप्रियता के बावजूद भी स्थिति यह है कि आज भी समस्त वर्गो के मध्य समाचार पत्रों की लोकप्रियता, इण्टरनेट से कहीं अधिक है। समाचार पत्रों और पत्रकारिता से लगाव का स्वरूप यदि आत्मीयता से परिपूर्ण है तो इण्टरनेट तथा संचार क्रान्ति के अन्य माध्यमों से लगाव और जुड़ाव सहज भाव से अकारण तथा आत्मीयतापूर्ण ढंग से है।

वर्तमान बदलते हुए सन्दर्भ में हिन्दी पत्रकारिता के सामने अस्मिता, अस्तित्व, जिजीविषा एवं जीवटता का जो यह प्रश्न था वह आज भी बना हुआ है। प्रबुद्ध पत्रकार पं0 कमलापति त्रिपाठी ने भी पत्रकारिता के बारे में कहा है, ''ज्ञान और विज्ञान, दर्शन और साहित्य, कला और कारीगरी, राजनीति और अर्थनीति , समाजशास्त्र और इतिहास, संघर्ष और क्रान्ति, उत्थान और पतन, निर्माण और विनाश, प्रगति और दुर्गति के छोटे–बड़े प्रवाहों को प्रतिबिम्बित करने में पत्रकारिता के समान दूसरा कौन सफल हो सकता है?('त्रिपाठी, पृ 1 क) वास्तव में कहा जा सकता है कि हिन्दी पत्रकारिता आज अपने इस यक्ष प्रश्न की कसौटी पर खरी उतर चुकी है। क्योंकि जब बाजारवाद, संचार क्रान्ति एवं भूण्डलीकरण का दौर आया तो उस समय यही अनुमान लगाया जा रहा था कि इसके कारण विदेशी मीडिया भारतीय मीडिया पर पूरी तरह से हावी हो जायगी तथा भारतीय पत्रकारिता और हिन्दी पत्रकारिता को विदेशी मीडिया के आगे नतमस्तक होकर अपने अस्तित्व को गवाना पड़ेगा या उसे अपनी अस्मिता से समझौता करना पड़ेगा।

लेकिन हिन्दी पत्रकारिता ने इस सन्दर्भ में भी अपनी जीवटता एवं अतिजीविता का भली–भॉति परिचय दे दिया है कि भूमण्डलीकरण, संचार क्रान्ति और बाजारवाद के कारण आज जहॉ पर अनेक राष्ट्रों की पत्रकारिता ने घुटने टेक दिये है, वहीं हिन्दी पत्रकारिता आज भी शान से खड़ी है। हॉ, इतना अवश्य हुआ है कि उसे थोड़ा बहुत अपनी भाषायी स्वरूप से समझौता करना पड़ा है। जैसे स्वाधीनता संघर्ष के समय तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक प्श्चात् के समाचार पत्रों की भाषा और उसके शब्द–विन्यास की शैली में हिन्दी के तत्सम शब्दों की प्राधानता थी तो आज विदेशज तथा अन्य देशज शब्दों की प्रचुरता होती जा रही है। लेकिन यदि हम यह कहें कि इससे हिन्दी पत्रकारिता में गिरावट आयी है या उसके ओज, प्रवाह, तथा गाम्भीर्य में कमी आयी है तो यह अनुचित होगा। इस बाजारवाद में तथा पत्रकारिता के बढ़ते हुए आयामों ने हिन्दी पत्रकारिता को आज जनमानस के काफी करीब ला दिया है जिसके कारण हिन्दी पत्रकारिता के भाषायी स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। पहले के जमाने में हिन्दी पत्रकारिता का पाठक वर्ग मुख्य रूप से समाज का शिक्षित व प्रबुद्ध वर्ग ही था लेकिन आज हिन्दी भाषा का पाठक वर्ग और उसका प्रसार क्षेत्र बदल चुका है। इस कारण हिन्दी पत्रकारिता के भाषायी स्वरूप में भी परिवर्तन आ गया है।

अपने वर्तमान बदलते हुए सन्दर्भ में हिन्दी पत्रकारिता आज अभिजात्योन्मुखता के धरातल पर खड़ी रहकर जनोन्मुखता की ओर अग्रसर हुई है। किसी भी भाषा की पत्रकारिता का यह चरमलक्ष्य और साक्ष्य होता है। जिस प्रकार नारी की सार्थकता उसके मातृत्व में होती है उसी प्रकार से पत्रकारिता की सार्थकता भी उसकी जनोन्मुखता में ही होती है।

आजादी के बाद विज्ञान पत्रकारिता का विकास हुआ जिसने जन–जन को विज्ञान से जोड़ दिया। (तिवारी पृ367) इन्टरनेट के कारण यह अनुमान लगाया जा रहा था कि हिन्दी पत्रकारिता का प्रसार क्षेत्र संकुचित होगा लेकिन हुआ

ठीक उल्टा। आज हिन्दी भाषा के सभी समाचार पत्रों का प्रसार क्षेत्र दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। आज इन्टरनेट संस्करण भी इसके प्रसार क्षेत्र को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समाचार पत्रों के इस इन्टरनेट संस्करण के कारण विदेशों में भी हिन्दी पत्रकारिता का प्रसार क्षेत्र बढ़ा है आर आज हिन्दी पत्रकारिता अपने माध्यम से धीरे–धीरे विदेशों में भी स्थापित होना शुरू कर दिया है। आज हिन्दी विदेशों में भी आम जनमानस का अंग बनती जा रही हे। यह भी सत्य है कि समाचार पत्रों के इस इन्टरनेट संस्करण के कारण आज एक नयी प्रकार की हिन्दी उत्पन्न हुई है जिसे हम 'हिंगलिस' का नाम दे सकते है।

इसी बात को लेकर समीक्षक और आलोचक हिन्दी पत्रकारिता के उपर यह लांछन लगा रहे हैं कि वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता के कारण हिन्दी भाषा के रूप व स्वरूप में विकृति आ रही है। लेकिन यह सत्य नहीं, बल्कि व्यवहारिक है, क्योंकि हिन्दी भाषा का पाठक वर्ग अब हिन्दी भाषा, भाषी क्षेत्र का प्रबुद्ध वर्ग ही नहीं रह गया और न ही खादी, देशी तबका बल्कि इसके साथ–साथ इसमें अब गैर हिन्दी क्षेत्र के लोग भी जुड़ते जा रहे हैं। इस कारण से हिन्दी समाचार पत्र जगत को अपनी भाषायी स्वरूप में भी परिवर्तन करना पड़ रहा है।

इसके अतिरिक्त आज हिन्दी पत्रकारिता के उपर जो सबसे बड़ा दोष मढ़ा जा रहा है वह है हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों में आयी गिरावट का। आलोक मेहता के अनुसार भी ''एक स्वस्थ्य पत्रकारिता की सबसे बड़ी शर्त मानवीय सरोकार और मानवीय मूल्य है।(मेहता पृ 4) इस सन्दर्भ में यदि हम वर्तमान समय की परिस्थितियों और चुनौतियों की तुलना स्वाधीनता संघर्ष की परिस्थितियों और चुनौतियों से करते हैं तो हम यही पाते हैं कि हिन्दी पत्रकारिता जिसे समीक्षक और आलोचक हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों मे गिरावट कह रहे हैं, वह वास्तव में हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों में गिरावट न होकर वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों के अनुसार हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों में परिवर्तन है।

अतः जिसे हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों में गिरावट कहा जा रहा है, वह हिन्दी पत्रकारिता के मूल्यों में गिरावट न होकर बदलते हुए परिप्रेक्ष्य, सन्दर्भ, परिस्थितियों और चुनौतियों के सन्दर्भ में अपने आप को ढालने व समायोजित करने की चेष्टा भर है। इसी में हिन्दी पत्रकारिता के सातत्य और अतिजीविता का रहस्य भी छिपा हुआ है।

जहॉ तक हिन्दी पत्रकारिता के तकनीकी पक्ष का प्रश्न है तो आज हम यह देख रहे हैं कि हिन्दी पत्रकारिता दिन प्रति दिन स्वचालित पत्रकारिता होती जा रही है। ''आज हिन्दी पत्रकारिता के तकनीकी पहलू अधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। आजादी से पूर्व की पत्रिकाओं में शीर्षक लेखन सामग्री की साज–सज्जा, आवरण पृष्ठ की विशिष्ट सज्जा, चित्र एवं ब्लाक आदि का प्रयोग नगण्य था।(हर्ष पृ 100) स्वचालित इस सन्दर्भ में कि हिन्दी पत्रकारिता जहॉ पर पहले पूरी तरह से मानवीय श्रम और कला कौशल पर आधारित थी वहीं अब वह धीरे–धीरे मशीनों और तकनीकी पर निर्भर होती जा रही है। इसे हम समय की मॉग भी कह सकते है, क्योंकि यदि पत्रकारिता तकनीकी और मशीनी कला–कौशल का सहारा नहीं लेगी तो वैसी स्थिति में हिन्दी पत्रकारिता की संचालन लागत भी निकलना मुश्किल हो जायेगा और हिन्दी पत्रकारिता अतिजीविता के प्रश्न पर भी खरी नहीं उतर पायेगी।

हिन्दी पत्रकारिता स्वतंत्रता संघर्ष के समय से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त के कुछ वर्षो तक अपने कथ्यों को लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त के कुछ वर्षो तक अपने कथ्यों को लेकर जानी जाती थी, लेकिन आज यह कथ्य के स्थान पर तथ्य पर अधिकाधिक निर्भर होती जा रही है। आज इन्टरनेट ने एक प्रकार की सूचना क्रान्ति ला दी है। संचार क्रान्ति के इस दौर में व्यक्ति के पास अब इतना समय नहीं रह गया है िकवह ध्यान पूर्वक कत्यों के अवलोकन में उलझा रहे बल्कि अब वह इस प्रकार का समचार पत्र चाहता है जो उसे तुरन्त और तत्काल नयी सूचना दे दे। इस कारण से हिन्दी पत्रकारिता अब तथ्य प्रधान होती जा रही है तथा उसकी सम्पादकीय कला–कौशल से निर्भरता भी घटती जा रही है। ''जैसे–जैसे अखबारों के प्रकाशन की तकनीकी में सुधार होता गया और नये साधन आते गये पत्रकारिता का स्वरूप अधिक निखरता गया।(शर्मा, 29)

जहॉ तक वित्त और प्रबन्धन की बात है, हिन्दी पत्रकारिता आज वित्तीय और प्रबन्धकीय दृष्टिकोण से सशक्त, आत्मनिर्भर, स्वायत्त तथा स्वतंत्र होती जा रही है। पहले जहॉ वह कुछ लोगों के चन्दे और कृपा पर आश्रित रहती थी वहीं आज वह आर्थिक उदारीकण, पूॅजीवाद और बाजारीकरण के कारण धीरे–धीरे आत्मनिर्भर, स्वायत्त और स्वतंत्र नहीं रहना पड़ रहा है। यह उसकी वित्तीय स्वायत्तता के लिए आवश्यक एवं अपरिहार्य भी है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कहने में पूरी तरह से समर्थ हैं कि हिन्दी पत्रकारिता वर्तमान सन्दर्भो में अपनी अतिजीविता, सात्यता, जीवटता को साबित करने में तथा अपने अस्तित्व और अस्मिता को बनाये रखने में पूरी तरह से सफल हुई है।

आर्थिक उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, संचार क्रान्ति, बाजारवाद के कारण तथा 90 के दशक के उथल–पुथल एवं झंझावात के समय ऐसा लग रहा था कि हिन्दी पत्रकारिता के दिन गिने चुने रह गये हैं, क्योंकि जहॉ पहले सम्पादकों,

पत्रकारों की निष्ठा अपने समाचार–पत्र और उसके पाठक वर्ग के प्रति होती थी वहीं आज यह निष्ठा मोटे–मोटे वित्तीय पैकेजों के प्रति होती जा रही है। लेकिन यह तो भला हो उन प्रबुद्ध एवं सामान्य पाठक वर्ग का जिन्होंने हिन्दी समाचार पत्र और पत्रकारिता के उपयोगिता का माध्यम न बनाकर आस्था और गरिमा के साध्य के रूप में स्वीकार किया और हिन्दी पत्रकारिता के अस्तित्व, अस्मिता, गरिमा, सातत्य और निरन्तरता पर ऑच नहीं आने दी।

सन्दर्भ

शर्मा, अशोक कुमारः *संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता,*

मेहता, आलोक : *भारत में पत्रकारिता*

त्रिपाठी, कमलापति : *पत्र और पत्रकार कला*

तिवारीः *पत्रकारिता का वृहद इतिहास,* वाणी प्रकाशन , 1997

हर्ष, हरदानः *हिन्दी पत्रकारिता के प्रतिमान,*, रचना प्रकाशन जयपुर, 1999

राजकिशोरः *पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य,*

आर्य, पी0के0: *पत्रकारिता दिशा एवं दशा,*